

समाजवादी आंदोलन की मुख्य आवाज जो खामोश हो गई

रवि प्रकाश सिंह

समाजवादी आंदोलन से निकले नेता शरद यादव की हमेसा के लिए खामोश हो गयी। लेकिन उनके राजनीतिक सफर को भारतीय राजनीति में हमेसा याद रखा जायेगा। एक ऐसा नेता जिसने डॉ. लोहिया को अपना आर्द्ध बनाया तो जय प्रकाश नारायण यानी जेपी को गुरु। लोहिया के सिद्धांतों पर चलकर सामाजिक लड़ाई लड़ी तो जेपी के कहने पर उपचुनाव में लड़ा और जीता जीता। वो नेता जिसने मंडल कमिशन की सिफारिशों को लागू कराने में अहम भूमिका निभाई तो लालू को सीएम भी बनाया। ऐसा नेता की

अलविदा शरद यादव 1947-2023

जिसकी पृष्ठभूमि तीन राज्यों से होकर गुजरी, राजनीति का शुरूआत मध्य प्रदेश और बाद में यूपी और बिहार की राजनीति का बढ़ा घेरा बना। शरद यादव का जन्म मध्य प्रदेश में हुआ लेकिन उनकी कर्मभूमि उत्तरप्रदेश और बिहार रही। जेपी आंदोलन से निकलकर भारतीय राजनीति में एक अलग पहचान बनाने वाले शरद यादव के नाम ऐसी कई उपलब्धियां हैं जिसका बखान करना भारतीय राजनीति में छोटी बात होगी। जेपी आंदोलन लोहिया के आर्द्ध पर चलने वाले और उनकी उंगली पकड़कर सक्रिय राजनीति में खुद को स्थापित करने वाले कम ही नेता हैं, उनका परिधान भी परंपरागत यानी धोती कुर्ता था। उसमें चंद्र शेरर

सिंह, मूलायम सिंह यादव का नाम आता है। संसद में समाजवादी विचारों को दमखम के साथ रखने वाले शरद यादव कभी अपनी कही बातों से पीछे नहीं हटे, हाँ इसका राजनीतिक खामियाजा भी उन्हें उठाना पड़ा। संबन्धों का निवृहन कैसे किया जाता है ये शरद यादव के अंदर कूट-कूट कर भरा था। वाराणसी में कृष्णानंद राय की हत्या में जब राजनाथ सिंह समेत कई नेता धरने पर बैठे थे और इस बात की जानकारी लगाने पर शरद यादव खुद यहाँ आये धरने का समर्थन किया। वहीं जब 2014 में नरेंद्र मोदी के खिलाफ जब केजरीवाल वाराणसी ताल ठोकने उतरे तो उस समय केजरीवाल के शरद यादव प्रचार करने वाराणसी आये थे।

27

साल की उम्र में बने सांसद और तीन बाट दिया इस्तीफा

1947 को मध्य प्रदेश के होशंगाबाद के बंदीगांव के एक विसान परिवार में जम्मे शरद यादव 27 की उम्र में जबलपुर लोकसभा सीट से सांसद बुनियर पहली बार शरद यादव संसद पहुंचे। मध्य प्रदेश मूल का हो एं भी अपने राजनीतिक जीवन की धूरी बिहार और उत्तर प्रदेश की सियासत से बाहर।

जबलपुर इंजीनियरिंग कॉलेज (राबड़ीन मॉडल साइंस कॉलेज) के छात्र संघ अध्यक्ष भी दुने गए।